International Journal of Sanskrit Research 2019; 5(6): 81-83

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2019; 5(6): 81-83
© 2019 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 16-09-2019
Accepted: 21-10-2019

वीर सिंह
(1). शोधच्छात्रा, नेहरू मैमोरियल शिव नारायण दास स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बदायूँ, उत्तर प्रदेश, भारत
(2). महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
मधु पटेल
(1). शोधच्छात्रा, नेहरू मैमोरियल शिव नारायण दास स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बदायूँ, उत्तर प्रदेश, भारत
(2). महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत

काशिकाके प्रथम अध्यायके उदाहरणोंका प्रक्रियानिर्देश (स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ, अचः परस्मिन्पूर्वविधौ)

वीर सिंह

सारांश
मेरे शोधप्रबन्धका शीर्षक 'काशिकाके प्रथम अध्यायके उदाहरणोंका प्रक्रियानिर्देश' है। वस्तुतः काशिकाकी स्वकीय शैली यह है कि उसमें जो उदाहरण दिये जाते हैं उनका प्रक्रियानिर्देश प्रायः किया ही नहीं जाता है और यदि कहींपर किया भी जाता है तो वह इतना निगूढ होता है कि उतनेमात्रसे उदाहरणोंकी प्रक्रिया स्पष्ट नहीं हो पाती है और प्रक्रियाको समझे विना शास्त्रकी चरितार्थता असम्भव है। यही कारण मेरे इस शोधप्रबन्धकी अपरिहार्यताको प्रदर्शित करता है जो कि विना प्रक्रियानिर्देशके सम्भव नहीं है। मेरा यह प्रयास उसी दिशामें है।

कूटशब्दः- काशिका, स्थानिवदादेशः, अनल्विधौ, परस्मिन्, पूर्वविधौ, प्रक्रिया।

प्रक्रियानिर्देश

केन

किम्– प्रातिपदिक। 'कर्तृकरणयोस्तृतीया' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/3/18) इस सूत्रसे किम् इससे पर तृतीया विभक्ति, एकवचन, टा यह प्रत्यय हुआ–
किम् टा– 'किमः कः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/2/103) इस सूत्रसे किम् इसके स्थानमें क यह आदेश हुआ–
क टा– 'टाङसिङसामिनात्स्याः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/1/12) इस सूत्रसे टा इसके स्थानमें इन यह आदेश हुआ। 'स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 1/1/55) इस सूत्रसे क यह आदेश किम् इस अङ्गसंज्ञक स्थानीके समान अङ्गसंज्ञक हुआ–
क इन– 'आद् गुणः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/84) इस सूत्रसे अ इ इन दोनोंके स्थानमें गुणसंज्ञक (ए) यह आदेश हुआ–
क् ए न– केन।। इति सिद्धम्।।
प्रकृत्य
लौकिक विग्रह– प्रकर्षेण कृत्वा।
अलौकिक विग्रह– प्र कृ क्त्वा।
डुकृञ् (कृ)– धातु। 'समानकर्तृकयोः पूर्वकाले' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/4/21) इस सूत्रसे कृ इससे पर क्त्वा (त्वा) यह प्रत्यय हुआ–
कृ त्वा।
प्र कृ त्वा– 'कुगतिप्रादयः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/2/19) इस सूत्रसे प्र कृ त्वा इसकी प्रादितत्पुरुषसमाससंज्ञा हुई। 'समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/1/37) इस सूत्रसे त्वा इसके स्थानमें ल्यप् (य) यह आदेश हुआ–
प्र कृ य– 'ह्रस्वस्य पिति कृति तुक्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/69) इस सूत्रसे ऋ इसके अन्तमें तुक् (त्) यह आगम हुआ। 'स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 1/1/55) इस सूत्रसे ल्यप् (य) यह आदेश क्त्वा (त्वा) इस कृत्संज्ञक स्थानीके समान कृत्संज्ञक हुआ–
प्र कृ त् य– 'प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/3/46) इस सूत्रसे प्र कृ त् य इससे पर प्रथमा विभक्ति, एकवचन, सु यह प्रत्यय हुआ–
प्र कृ त् य सु– 'अव्ययादाप्सुपः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/4/82) इस सूत्रसे सु इसका लुक्संज्ञक अदर्शन हुआ। 'स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 1/1/55) इस सूत्रसे प्र कृ त् य,

ल्यबन्त (यान्त) यह आदेश प्र कृ त्वा, क्त्वान्त (त्वान्त) इस अव्ययसंज्ञक स्थानीके समान अव्ययसंज्ञक हुआ–
प्र कृ त् य– प्रकृत्य।। इति सिद्धम्।।

दाधिकम्

लौकिक विग्रह– दध्नि संस्कृतम्।
अलौकिक विग्रह– दधि ङि संस्कृत सु।
दधि ङि संस्कृत सु– 'दध्नष्ठक्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 4/2/70) इस सूत्रसे दधि ङि इससे पर ठक् (ठ) यह प्रत्यय हुआ–
दधि ङि ठ– 'सुपो धतुप्रातिपदिकयोः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/4/71) इस सूत्रसे टा इसका लुक्संज्ञक अदर्शन हुआ–
दधि ठ– 'ठस्येकः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/3/50) इस सूत्रसे ठ इसके स्थानमें इक यह आदेश हुआ–
दधि इक– 'किति च' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/2/118) इस सूत्रसे अ इसके स्थानमें वृद्धिसंज्ञक (आ) यह आदेश हुआ। 'स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 1/1/55) इस सूत्रसे इक यह आदेश ठक् (ठ) इस तद्धितसंज्ञक स्थानीके समान तद्धितसंज्ञक हुआ–
द् आ धि इक– 'यस्येति च' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/4/148) इस सूत्रसे इ इसका लोपसंज्ञक अदर्शन हुआ–
द् आ ध् इक– 'प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/3/46) इस सूत्रसे द् आ ध् इक इससे पर प्रथमा विभक्ति, एकवचन, सु यह प्रत्यय हुआ–
द् आ ध् इक सु– 'अतोऽम्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/1/24) इस सूत्रसे सु इसके स्थानमें अम् यह आदेश हुआ–
द् आ ध् इक अम्– 'अमि पूर्वः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/103) इस सूत्रसे अ अ इन दोनोंके स्थानमें पूर्वरूप (अ) यह एकादेश हुआ–
द् आ ध् इक् अ म्– दाधिकम्।। इति सिद्धम्।।

वृक्षाय

वृक्ष– प्रातिपदिक। 'चतुर्थी सम्प्रदाने' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/3/13) इस सूत्रसे वृक्ष इससे पर चतुर्थी विभक्ति, एकवचन, ङे यह प्रत्यय हुआ–
वृक्ष ङे– 'ङेर्यः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/1/13) इस सूत्रसे ङे इसके स्थानमें य यह आदेश हुआ–
वृक्ष य– 'सुपि च' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/3/102) इस सूत्रसे अ इसके स्थानमें दीर्घसंज्ञक (आ) यह आदेश हुआ। 'स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 1/1/55) इस सूत्रसे य यह आदेश ङे इस सुप् स्थानीके समान सुप् हुआ–
वृक्ष् आ य– वृक्षाय।। इति सिद्धम्।।

अकुरुताम्

डुकृञ् (कृ)– धातु। 'अनद्यतने लङ्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/2/111) इस सूत्रसे कृ इससे पर लङ् लकार, परस्मैपद, प्रथमपुरुष, द्विवचन, तस् यह प्रत्यय हुआ–
कृ तस्– 'तस्थस्थमिपां तान्तन्तामः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/4/101) इस सूत्रसे तस् इसके स्थानमें ताम् यह आदेश हुआ–
कृ ताम्– 'तनादिकृञ्भ्य उः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/1/79) इस सूत्रसे कृ इससे पर उ यह प्रत्यय हुआ–
कृ उ ताम्– 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/3/84) इस सूत्रासे ऋ इसके स्थानमें गुणसंज्ञक (अर्) यह आदेश हुआ–
क् अर् उ ताम्– 'अत उत्सार्वधतुके' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/4/110) इस सूत्रसे अ इसके स्थानमें उ यह आदेश हुआ। 'स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 1/1/55) इस सूत्रसे ताम् यह आदेश तस् इस तिङ् सार्वधातुक स्थानीके समान तिङ् सार्वधातुक हुआ–
क् उर् उ ताम्– 'लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/4/71) इस सूत्रसे क् उर् उ इसके आदिमें अट् (अ) यह आगम हुआ–
अ क् उर् उ ताम्– अकुरुताम्।। इति सिद्धम्।।

वः

युष्मद्– प्रातिपदिक। 'षष्ठी शेषे' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/3/50) इस सूत्रसे युष्मद् इससे पर षष्ठी विभक्ति, बहुवचन, आम् यह प्रत्यय हुआ–
युष्मद् आम्– 'बहुवचनस्य वस्नसौ' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 8/1/21) इस सूत्रसे युष्मद् आम् इसके स्थानमें वस् यह आदेश हुआ–
वस्– 'ससजुषो रुः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 8/2/66) इसके स्थानमें स् इसके स्थानमें रु (र्) यह आदेश हुआ। 'स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 1/1/55) इस सूत्रसे वस् यह आदेश युष्मद् आम् इस पदसंज्ञक स्थानीके समान पदसंज्ञक हुआ–
व र्– 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 8/3/15) इस सूत्रसे र् इसके स्थानमें विसर्ग (:) यह आदेश हुआ–
वः।। इति सिद्धम्।।

पटयति

लौकिक विग्रह– पटुम् आचष्टे।
अलौकिक विग्रह– पटु अम् णिच्।
पटु– प्रातिपदिक। 'कर्मणि द्वितीया' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/3/2) इस सूत्रसे पटु इससे पर द्वितीया विभक्ति, एकवचन, अम् यह प्रत्यय हुआ–
पटु अम्– 'तत्करोति तदाचष्टे' (वार्त्तिकपाठः) इस वार्त्तिकसे पटु अम् इससे पर णिच् (इ) यह प्रत्यय हुआ–
पटु अम् इ– 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/4/71) इस सूत्रसे अम् इसका लुक्संज्ञक अदर्शन हुआ–
पटु इ– 'टेः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/4/143) इस सूत्रसे उ इसका लोपसंज्ञक अदर्शन हुआ। 'णाविष्ठवत् प्रातिपदिकस्य' (वार्त्तिकपाठः) इस वार्त्तिकसे णिच् (इ) यह इष्ठन् (इष्ठ) इसके समान हुआ–
पट् इ– 'अत उपधयाः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/2/116) इस सूत्रसे अ इसके स्थानमें वृद्धिसंज्ञक (आ) यह आदेश प्राप्त हुआ। 'स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 1/1/55) इस सूत्रसे उ इसका लोपसंज्ञक अदर्शन उ इस स्थानीके समान हुआ जिससे अ इसके स्थानमें वृद्धिसंज्ञक (आ) इस आदेशकी प्राप्तिका बाध हुआ। 'स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 1/1/55) इस सूत्रके 'अनल्विधो' इस अंशसे उ इसके लोपसंज्ञक अदर्शनके उ इस स्थानीके समान होनका निषेध हुआ जिससे पुनः अ इसके स्थानमें वृद्धिसंज्ञक (आ) यह आदेश प्राप्त हुआ। 'अचः परस्मिन् पूर्वविधौ' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 1/1/56) इस सूत्रसे उ इसका लोपसंज्ञक अदर्शन उ इस स्थानीके समान हुआ जिससे अ इसके स्थानमें वृद्धिसंज्ञक (आ) इस आदेशकी प्राप्तिका बाध हुआ। 'वर्तमाने लट्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/2/123) इस सूत्रसे पट् इ इससे पर लट् लकार, परस्मैपद, प्रथम पुरुष, एकवचन, तिप् (ति) यह प्रत्यय हुआ–
पट् इ ति– 'कर्तरि शप्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/1/68) इस सूत्रसे पट् इ इससे पर शप् (अ) यह प्रत्यय हुआ–
पट् इ अ ति– 'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/3/84) इस सूत्रसे इ इसके स्थानमें गुणसंज्ञक (ए) यह आदेश हुआ–
पट् ए अ ति– 'एचोऽयवायावः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/75) इस सूत्रसे ए इसके स्थानमें अय् यह आदेश हुआ–
पट् अय् अ ति– पटयति।। इति सिद्धम्।।

अवधीत्

हन (हन्)– धातु। 'लुङ्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/2/110) इस सूत्रसे हन् इससे पर लुङ् लकार, परस्मैपद, प्रथमपुरुष, एकवचन, तिप् (ति) यह प्रत्यय हुआ–

हन् ति– 'इतश्च' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/4/100) इस सूत्रसे इ इसका लोपसंज्ञक अदर्शन हुआ–
हन् त्– 'च्लि लुङि' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/1/43) इस सूत्रसे हन् इससे पर च्लि यह प्रत्यय हुआ–
हन् च्लि त्– 'च्लेः सिच्' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 3/1/44) इस सूत्रसे च्लि इसके स्थानमें सिच् (स्) यह आदेश हुआ–
हन् स् त्– 'लुङि च' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 2/4/43) इस सूत्रसे हन् इसके स्थानमें वध यह आदेश हुआ–
वध स् त्– 'आर्धधातुकस्येड् वलादेः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/2/35) इस सूत्रसे स् इसके आदिमें इट् (इ) यह आगम हुआ–
वध इ स् त्– 'अस्तिसिचोऽपृक्ते' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/3/96) इस सूत्रसे त् इसके आदिमें ईट् (ई) यह आगम हुआ–
वध इ स् ई त्– 'अतो लोपः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/4/48) इस सूत्रसे अ इसका लोपसंज्ञक अदर्शन हुआ–
वध् इ स् ई त्– 'अतो हलादेर्लघोः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 7/2/7) इस सूत्रसे अ इसके स्थानमें वृद्धिसंज्ञक (आ) यह आदेश प्राप्त हुआ। 'स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 1/1/55) इस सूत्रसे अ इसका लोपसंज्ञक अदर्शन अ इस स्थानीके समान हुआ जिससे अ इसके स्थानमें वृद्धिसंज्ञक (आ) इस आदेशकी प्राप्तिका बाध हुआ। 'स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 1/1/55) इस सूत्रके 'अनल्विधौ' इस अंशसे अ इसके लोपसंज्ञक अदर्शनके अ इस स्थानीके समान होनका निषेध हुआ जिससे पुनः अ इसके स्थानमें वृद्धिसंज्ञक (आ) यह आदेश प्राप्त हुआ। 'अचः परस्मिन् पूर्वविधौ' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 1/1/56) इस सूत्रसे पुनः अ इसका लोपसंज्ञक अदर्शन अ इस स्थानीके समान हुआ जिससे पुनः अ इसके स्थानमें वृद्धिसंज्ञक (आ) इस आदेशकी प्राप्तिका बाध हुआ। 'इट ईटि' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 8/2/28) इस सूत्रसे स् इसका लोपसंज्ञक अदर्शन हुआ–
वध् इ ई त्– 'अकः सवर्णे दीर्घः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/1/97) इस सूत्रसे इ ई इन दोनोंके स्थानमें दीर्घसंज्ञक (आ) यह एकादेश हुआ–
वध् ई त्– 'लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः' (अष्टाध्यायीसूत्रापाठः 6/4/71) इस सूत्रसे वध् इसके आदिमें अट् (अ) यह आगम हुआ–
अ वध् ई त्– अवधीत्।। इति सिद्धम्।।

सहायकग्रन्थ सूची

1. अष्टाध्यायीसूत्रापाठः (पाणिनिमुनिप्रणीतः)– सम्पादकः– पण्डित ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, प्रकाशकः– रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
2. धातुपाठः (पाणिनिमुनिप्रणीतः)– सम्पादकः– पण्डित ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, प्रकाशकः– रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
3. अष्टाध्यायीभाष्यम् (प्रथमावृत्तिः), त्रयो भागाः– लेखकौ– पण्डित ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, प्रज्ञादेवी व्याकरणाचार्या, प्रकाशकः– रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
4. माधवीया धातुवृत्तिः (सायणविरचिता)– सम्पादकः– विजयपालो विद्यावारिधिः, प्रकाशकः– रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
5. काशिका (वामनजयादित्यविरचिता)– सम्पादकः– विजयपालो विद्यावारिधिः, प्रकाशकः– रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
6. व्याकरणमहाभाष्यम् (महर्षिपतञ्जलिमुनिविरचितम्, प्रदीपोद्द्योतटीकाद्वयसहितम्), षड् भागाः– सम्पादकः– श्री भार्गव शास्त्री, प्रकाशकः– चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली।